International Journal of Arts & Education Research

पुनर्जागरण काल में नारी की स्थिति

विपिन कुमार*[1]

[1]शोधार्थी, सी0एम0जे0 विश्वविद्यालय, मेघालय.

18वीं शताब्दी में सम्पूर्ण भारतीय समाज में सर्वत्र विभिन्न सामाजिक कुरीतियाँ और नैराशय था। भारतीय समाज धर्म, रूढ़ि और परम्पराओं के कठोर बन्धनों में जकड़ गया था। सर्वत्र अत्याचार, कुप्रथाओं का ही बोलबाला था, जिसमें नारी की स्थिति अधिक से अधिक निम्न स्तर की होती जा रही थी। इसी दौरान भारत की धार्मिक और रा-ट्रवादी चेतना अत्यधिक अंशों में सु-ुप्त हो गयी थी। इन्हीं सभी कारणों से 19वीं सदी में एक नवीन बौद्धिक लहर चली, जिसके फलस्वरू जाग्रति के एक नये युग का सूत्रपात हुआ। अन्वे-ाण तथा तर्कवाद की भावना ने यूरोपीय समाज को एक प्रगति प्रदान की। यह सर्वमान्य तथ्य है कि ''विकास एक सहज प्रक्रिया है जिस प्रकार गन्ने की नई फसल उगाने से पहले पेढ़ी जलायी जाती है वैसे ही पतन की चरम सीमा पर पहुंचा समाज कुछ प्रबुद्ध जनों के आत्ममंथन से उत्पन्न प्रेरणा से नवीन कलेवर धारणा करता है'' यही 19वीं ृाताब्दी के प्रारम्भ में भी हुआ। जब 18वीं ृाताब्दी में सर्वत्र अशान्ति का वातावरण था तथा सम्पूर्ण समाज अन्धकार में डूबा हुआ था, तब 19वीं ृाताब्दी में एक नवीन मध्यम वर्ग का उदय हुआ। यह नवीन शिक्षित मध्यम वर्ग तर्कवाद, विज्ञानवाद तथा मानववाद से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका। इन्हीं पाश्चात्य शिक्षित भारतीयों ने इस नवज्ञान से प्रभावित होकर हिन्दू धर्म में सुधार किये, तभी भारत के धार्मिक एवं सामाजिक जीवन में नवचेतना का संचार हुआ। इसी सदी ने एक नवीन विचारधारा को जन्म दिया और भारत के समाज, धर्म, साहित्य तथा राजनीतिक जीवन को गम्भीरतापूर्वक प्रभावित किया। भारत में जागृति की इस प्रक्रिया को पाश्चात्य ज्ञान ज्योति से यथे-ट बल मिला।

IJAER

*Corresponding Author